आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2015-17

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

प्रसार शिक्षा निदेशालय

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय

बीकानेर

पशु पालन नए आयाम

परिकल्पना एवं निर्देशन - प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत

वर्ष : 4 | अंक : 2 | बीकानेर, अक्टूबर, 2016 | मूल्य : ₹ 2.00

कुलपति की कलम से.....

देशी गौवंश की बढ़ती लोकप्रियता एक अच्छा संकेत

प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत

देशी गौवंश हमारे लिए वरदान स्वरूप है। राजस्थान देश का पहला राज्य है जहां सर्वाधिक देशी गौवंश है जिससे हमें 90 प्रतिशत दूध प्राप्त होता है। देश में स्वदेशी गौ नस्लों के संवर्द्धन और विकास कार्यों को प्राथमिकता से आगे बढ़ाया जा रहा है क्योंकि इनमें सस्ते और सरल लालन–पालन से ही अच्छा उत्पादन देने की क्षमता विद्यमान है। इस अद्भूत क्षमता के कारण विदेशों में भी हमारे देशी गौवंश के पालन की प्रवृति बढ़ रही है। ब्राजील जैसे देश में ''गिर'' नस्लों की गायें बहुतायत में पाली जा रही हैं जिनसे 60 लीटर दूध प्रतिदिन तक का उत्पादन लिया गया है। राज्य के स्वदेशी गौवंश की देश के अन्य प्रांतों में भी मांग बढ़ रही है। पुणे में कुछ प्रगतिशील पशुपालकों ने ''थारपारकर'' काऊ क्लब की स्थापना की है। कर्नाटक राज्य में दो स्वंयसेवी संगठनों ने कांकरेज गौवंश केन्द्र स्थापित करने की पहल की है। राजस्थान वेटरनरी विश्वविद्यालय ने राज्य में स्थापित 8 पशुधन अनुसंधान केन्द्रों पर देशी गौवंश से वैज्ञानिक तरीकों से रखरखाव और खान–पान से ही 26 लीटर प्रतिदिन तक का दूध उत्पादन प्राप्त किया है। यह सफलता दवा, हार्मोन या जीन परिवर्तन के बिना ही प्राप्त की गई है। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने गौपालकों की जरूरतों के मुताबिक तीन क्षेत्रों में देशी गौवंश के संवर्द्धन कार्य किए हैं। दूध उत्पादन को बढ़ाना, दो ब्यांत में अंतर को कम करना और प्रथम ब्यांत आयु में कमी लाने के प्रयासों में आशातीत सफलता मिली है। प्रथम ब्यांत की आयु 5–6 वर्ष को कांकरेज गौवंश में ढाई वर्ष तक ले आया गया है। राज्य सरकार द्वारा विश्वविद्यालय में कामधेनू शोधपीठ की स्थापना करने से अत्याधुनिक तकनीकों के उपयोग से देशी गौवंश को अधिक उपयोगी और सबल बनाने के वैज्ञानिक प्रयास शुरू किये जायेंगे। इनमें उन्नत प्रजनन तकनीक और इन–विट्रो फर्टिलाइजेशन जैसे कार्यों को प्राथमिकता दी जाएगी। इन सबके साथ–साथ आयुर्वेद में पंचगव्य कार्य, स्वदेशी गौ दूध की गुणवत्ता, गौ–मूत्र के मानकीकरण जैसे अनुसंधान कार्य किये जायेंगे। हमारा गौवंश बेशकीमती धरोहर है। वेटरनरी विश्व विद्यालय ने देशी गौवंश के प्रसार के लिए अपने पशुधन अनुसंधान केन्द्रों में उत्तम देशी नस्लों के नंदी राज्य की गौशालाओं और प्रगतिशील पशुपालकों को भी निःशुल्क उपलब्ध करवाए हैं जिससे देशी गौवंश की उपयोगिता और प्रचलन को बढ़ावा मिले। वेटरनरी विश्वविद्यालय का प्रयास है कि राज्य की गौशालाएं गौ संवर्द्धन के केन्द्र बनें। देशी गायों का संवर्द्धन हो तथा घर–घर में इसका पालन हो।

(प्रो. ए. के. गहलोत)

ग्लोबल राजस्थान एग्रीटेक मीट 9-11 नवम्बर 2016 जयपुर

राजस्थान सरकार द्वारा कृषि एवं पशुपालन में आधुनिकतम उन्नत तकनीकों के प्रचार–प्रसार के लिए ग्लोबल राजस्थान एग्रीटेक मीट–2016 ''ग्राम'' का आयोजन आगामी 9–11 नवम्बर, 2016 को जयपुर में किया जा रहा है। यह आयोजन कृषि, बागवानी, पशुपालन के क्षेत्र में नवाचार, अनुसंधान की नवीनतम जानकारी के अलावा आपके व्यवसाय को चमकाने के लिए बहुत कुछ देखने, करने और सीखने का अवसर है। आप भी इस अवसर का लाभ उठाकर कृषि एवं पशुपालन को लाभकारी बनावें। समारोह के दौरान गोष्ठियां, वैज्ञानिकों से संवाद, दृश्य–श्रृव्य माध्यमों से उन्नत तकनीकों का प्रदर्शन, कृषि उद्यमियों के लिए स्टार्ट–अप कैम्प, क्षमता निर्माण कार्यक्रम और सर्वश्रेष्ठ किसानों व पशुपालकों के लिए पुरस्कारों का भी प्रावधान है। तीन दिवसीय समारोह में किसानों और पशुपालकों के समूह, प्रगतिशील किसान, केन्द्र और राज्य सरकार के शीर्ष स्तरीय अधिकारी, शिक्षाविद्, अंतर्राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान संस्थानों के वरिष्ठ विशेषज्ञ, वित्तीय संस्थान, विकास एजेन्सियां, आधारभूत संरचना निर्माता गण भाग लेंगे। अंतर्राष्ट्रीय कृषि सर्वोत्तम कार्य पद्धतियों को साझा करना, कृषि में होने वाले परिवर्तनों पर वैश्विक दृष्टिकोण, किसानों को उपभोक्ताओं से जोड़ने, सार्वजनिक–निजी भागीदारी के लिए कार्यात्मक प्रारूप तैयार करने जैसे विषयों पर चर्चा की जाएगी।

मुख्य समाचार

काजरी जोधपुर किसान मेले में राजुवास प्रदर्शनी को प्रथम पुरस्कार

केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, जोधपुर द्वारा आयोजित किसान मेला एवं कृषि नवाचार दिवस में वेटरनरी विश्वविद्यालय की टेक्नोलॉजी प्रदर्शनी को प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया है। मेले के मुख्य अतिथि जोधपुर सांसद श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत, महापौर श्री घनश्याम ओझा, विधायक जोधपुर श्री कैलाश भंसाली, विधायक लूणी श्री जोगाराम पटेल, ने राजुवास प्रदर्शनी को प्रथम पुरस्कार प्रदान किया। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने बताया कि वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा पशुपालन के क्षेत्र में किए जा रहे अनुसंधान और नवाचारों को राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर होने वाले प्रदर्शनियों व मेलों में मान्यता मिल रही है और राजुवास ने पिछले दो तीन वर्षों में अनेको राष्ट्रीय प्रदर्शनी और कृषक मेलों में भाग लेकर पुरस्कार जीते हैं। प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ. राजेश कुमार धूड़िया ने बताया कि प्रदर्शनी में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के संस्थानों, राज्य कृषि विश्वविद्यालयों और अन्य संस्थानों की 50 से भी अधिक प्रदर्शनी स्टॉल शामिल थी।

स्मार्ट-ग्राम परियोजना के डाइयां गांव में चिकित्सा शिविर में 92 रोगियों का उपचार

स्मार्ट–ग्राम परियोजना के अन्तर्गत वेटरनरी विश्वविद्यालय और चिकित्सा, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग के संयुक्त तत्वावधान में ग्राम डाइयां में एक दिवसीय स्वास्थ्य शिविर 21 सितम्बर को आयोजित किया गया। शिविर में डॉ. दया शंकर पारीक, प्रभारी चल इकाई चिकित्सा, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, बीकानेर के नेतृत्व में तीन सदस्यीय चिकित्सा दल ने अपनी सेवाएं दी। गांव में विभिन्न बीमारियों के 92 मरीजों का निःशुल्क उपचार कर दवाईयां वितरित की गई तथा बच्चों व महिलाओं का टीकाकरण कर स्वास्थ्य से जुड़ी हुई समस्याओं के बारे में परामर्श दिया गया।

गौशाला संचालकों का संभागीय सम्मेलन

राष्ट्रीय गाय आंदोलन, राजस्थान एवं वेटरनरी विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में 18 सितम्बर को गौशाला संचालक सम्मेलन एवं सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर समारोह की आयोजक संस्थाओं में गौ ग्राम सेवा संघ, पं. दीनदयाल उपाध्याय स्मृति मंच, बीकानेर गौशाला संघ व 25 सामाजिक संस्थाओं द्वारा गौ विकास और संवर्द्धन के लिए उल्लेखनीय कार्यों और योगदान के लिए वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत का नागरिक अभिनन्दन किया गया। रैवासा के स्वामी राघवाचार्य महाराज, संत रघुवीर दास, दाता रामेश्वरानंद और राजस्थान गौ सेवा समिति के अध्यक्ष महंत दिनेश गिरी महाराज के सानिध्य में आयोजित सम्मेलन की अध्यक्षता पूर्व मंत्री देवी सिंह भाटी ने की। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत, स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. छींपा और महापौर नारायण चौपड़ा एवं प्रधान राधा सिहाग ने अतिथि रूप में शिरकत की। सम्मेलन के संयोजक सूरजमाल सिंह नीमराना ने सभी का स्वागत कर उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। अतिथियों ने समारोह में बीकानेर की 25 और संभाग की 13 तथा राज्य की 4 गौशालाओं के संचालकों को सम्मानित किया। इससे पूर्व गौशाला संचालक सम्मेलन के मुख्य अतिथि वेटरनरी कॉलेज के अधिष्ठाता प्रो. जी.एस. मनोहर थे। विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. आर. के. धूड़िया ने गौपालन और संवर्द्धन के विषय पर व्याख्यान दिये। निर्मल बरड़िया व राजलदेसर के ललित दाधीच ने गौपालन के महत्व पर विचार प्रकट किए।

पशु आपदा प्रबंधन तकनीक पर पशुपालक प्रशिक्षण

पशु आपदा प्रबंधन तकनीकी केन्द्र द्वारा दो दिवसीय "पशु आपदा प्रबंधन" आधारित पशुपालक प्रशिक्षण शिविर 23 सितम्बर को सम्पन्न हुआ। केन्द्र के मुख्य अन्वेषक डॉ. प्रवीण बिश्नोई ने पशु मेलों आधारित आपदा प्रबंधन पर सचित्र व्याख्यान तथा सोहेल मोहम्मद ने केन्द्र द्वारा विकसित तकनीकों व विश्वविद्यालय की नई तकनीक और आपदा प्रबंधन में योगदान विषय पर व्याख्यान दिया। डॉ. तेजपाल ने पशु स्वास्थ्य प्रबंधन विषय पर जानकारी दी। पशु पोषण विभाग के प्रो. राधेश्याम आर्य ने पशुओं के पालन–पोषण व चारा प्रबंधन पर तथा मेडिसिन विभाग से डॉ. सुनीता चौधरी ने पशुओं के विभिन्न रोगों व उपचार, एवं बचाव विषय पर व्याख्यान दिया। प्रशिक्षण उपरान्त पशुपालकों को प्रमाण पत्र भी प्रदान किये गए।

विश्व रेबीज दिवस पर निःशुल्क रेबीज टीकाकरण और जागरूकता शिविर का आयोजन

विश्व रेबीज दिवस पर 28 सितम्बर को केनाइन वेलफेयर सोसाइटी और वेटरनरी विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित निःशुल्क रेबीज टीकाकरण शिविर में 42 श्वानों का टीकाकरण करके रेबीज के प्रति आमजन को जागरूक किया गया। शिविर के संयोजक और निदेशक क्लिनिक्स प्रो. अनिल आहुजा ने बताया कि शिविर में 30 श्वानों के मालिकों को टोकन प्रदान किए गए। इस अवसर पर श्वान पालकों को श्वानों की देखभाल व बीमारियों से बचाव की जानकारी देकर पेम्पलेट वितरित किए गए। शिविर में डॉ. डी.के. बिहानी, डॉ. दीपिका धूड़िया, डॉ. गौरव जैन, डॉ. जितेन्द्र तंवर, डॉ. परमाल सिंह, डॉ. दीक्षा शर्मा, डॉ. रविन्द्र सिंह, डॉ. सुनिल मरवाहा व डॉ. पीर मोहम्मद के अलावा स्नातक विद्यार्थियों ने अपनी सेवाएं प्रदान की।

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

सूरतगढ़ केन्द्र द्वारा 227 पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) द्वारा 2, 17, 20, 21 एवं 24 सितम्बर को गांव पीपेरन, 8 एसएसटीडी, माणकसर, अमरपुरा जाटान तथा रंगमहल गांवों में एक दिवसीय तथा 7–8 सितम्बर को केन्द्र परिसर में दो दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 227 पशुपालकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी कोटा द्वारा 347 पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कोटा द्वारा 3, 5, 6, 7, 8, 9, 14, 17, 24 एवं 26 सितम्बर को गांव मंडानिया, दसलाना, विनोधा, अडूसा, राजगढ़, राजनगर, विनोदखुर्द, हनुमंत खेड़ा, सारोला एवं हाथीखेड़ा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविर में 347 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

टोंक केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, टोंक द्वारा 6, 8, 16, 19, 22, 26 एवं 28 सितम्बर को गांव मोटूका, डाडीया, झोला, पहाड़िया, जमनपुरा, सुकुनपुरा एवं बडूनी गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 224 पशुपालकों ने भाग लिया।

लूनकरणसर केन्द्र द्वारा पशुपालकों हेतु प्रशिक्षण शिविर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा 7, 15, 24 एवं 28 सितम्बर को गांव जैस्सा, कालवास, फूलदेसर एवं सोदरा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 172 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

बाकलिया (नागौर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बाकलिया, लाडनूं (नागौर) द्वारा 5, 6, 7, 9, 13, 17 एवं 20 सितम्बर को गांव जसवन्तगढ़, भरनावा, सिलनवाद, खामियाद, नंदवान, दुजार में तथा 16 एवं 21–22 सितम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 370 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 229 पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कुम्हेर द्वारा 6, 9, 16, 19, 21, 23, 26 एवं 28 सितम्बर को गांव तलछेरा, मुंडोटा, सतवाड़ी, नंगला मेथना, थून, कोरेर एवं थेरावर गांवों में तथा दिनांक 8 सितम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 229 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

चूरू केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, चूरू द्वारा 3, 5, 6, 14, 19 एवं 21 सितम्बर को गांव हामुसर, मालासर, देपालसर, चूरू, मेरूसर, पुलासर एवं गड़सीसर गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 280 पशुपालकों ने भाग लिया।

डूंगरपुर द्वारा 83 महिला पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 12, 17, 21, 23, 25 एवं 27 सितम्बर को गांव शिवपुरा, खापरड़ा, फलोज, फुटी तलाई, मालचोकी एवं सुराथा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 83 महिला पशुपालकों सहित कुल 159 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

सिरोही केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सिरोही द्वारा 5, 8, 12 एवं 22 सितम्बर को गांव हाथल, झाड़ोली, चण्डेला एवं सरतरा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 98 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, धौलपुर द्वारा 341 पशुपालक प्रशिक्षित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 9, 17, 20, 24, 26 एवं 28 सितम्बर को गांव पंचगाव, तक्तीपुरा, टेहरी, कुम्हेरी, मसुदपुरा एवं ओडी गांवों में तथा दिनांक 14 एवं 15 सितम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 341 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

अजमेर केन्द्र द्वारा पशुपालक प्रशिक्षण शिविर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, अजमेर द्वारा 2, 5, 6, 7, 9, 13, 18, 22, 23 एवं 27 सितम्बर को गांव कल्याणपुरा, गोयला, सरवाड़, कालाभाटा, जावला, छापरी, पंडगा, कादेड़ा, भिनाय एवं देवगांव गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 248 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

बोजुन्दा केन्द्र द्वारा 370 पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बोजुन्दा (चितौड़गढ़) द्वारा 8, 10 एवं 15 सितम्बर को केन्द्र परिसर में तथा दिनांक 14, 16, 17, 19, 22 एवं 24 सितम्बर को गांव रावड़दा, बिछोर, राजगढ़, गोपालपुरा, बोराव एवं भैंसरोड़गढ़ गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 110 महिला पशुपालकों सहित कुल 370 पशुपालकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर द्वारा गोष्ठी एवं प्रशिक्षण शिविर

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा 7–8 सितम्बर को केन्द्र परिसर में दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविर तथा 9, 13, 14, 21 एवं 26 सितम्बर को गांव 23 एनटीआर, भगवान, चाईया, चारणवासी एवं नुंआब गांवों में एक दिवसीय कृषक एवं पशुपालन प्रशिक्षण शिविर/गोष्ठी का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 220 कृषक एवं पशुपालकों ने भाग लिया।

उन्नत पशुपालन के प्रमुख स्तम्भ

राजस्थान राज्य की अर्थव्यवस्था में पशुपालन एक महत्वपूर्ण स्तम्भ है। राजस्थान राज्य का 50 प्रतिशत से अधिक भाग मरूस्थल है तथा कृषि पूर्णतः वर्षा पर आधारित है। ऐसी परिस्थिति में किसानों के लिए पशुपालन लगातार आजीविका का प्रमुख स्रोत है। इस पशुपालन को सफल बनाने में कुछ अवयव मुख्य भूमिका निभाते हैं जिनके सफल प्रयोग द्वारा किसान कम लागत में अधिक लाभ कमा सकता है।

उचित प्रजनन :– पशुपालन में पशु का चुनाव एवं प्रजनन सबसे महत्वपूर्ण होते हैं। अधिक उत्पादन के लिए हमेशा अच्छी नस्ल का चुनाव करना चाहिए। देशी नस्ल के कम दूध देने वाले जानवरों को अधिक उत्पादन क्षमता वाले साण्डों से तथा नस्ल विहीन कम दूध देने वाले जानवरों को विदेशी नस्ल के सांडों (हालेस्टिन फ्रिजियन, जर्सी, ब्राउन स्विस) के वीर्य द्वारा कृत्रिम गर्भाधान द्वारा ग्याभित करवाकर अधिक उत्पादन वाले पशु प्राप्त कर सकते है। परन्तु ऐसे समय में इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि पशु अपने क्षेत्र की भौगोलिक परिस्थितियों में खुद को ढ़ालकर उचित प्रबन्धन प्रदान कर सके।

उचित प्रबन्धन :– पशुपालन जगत में एक कहावत हमेशा से निहित है। ''उचित प्रबन्धन अधिक उत्पादन'। पशु प्रबन्धन द्वारा न केवल हम अधिक दूध उत्पादन कर सकते हैं अपितु उनमें बीमारियों के होने की संभावना भी क्षीण हो जाती है। पशु प्रबन्धन में सबसे महत्वपूर्ण पशु आवास होता है। पशुओं का आवास साफ–सुथरा, हवादार एवं छायादार होना चाहिए। आवास इस प्रकार हो जिससे विषम परिस्थितियों में भी बचा जा सके। अत्यधिक तापमान, दुधारू पशुओं में दुग्ध उत्पादन एवं प्रजनन क्षमता पर प्रभाव डालता है। अतः इससे बचाव हेतु प्रचुर पानी व छाया का प्रबन्ध होना चाहिए। पशुओं के खाने एवं साफ पानी की उपलब्धता निरन्तर एवं अलग से होनी चाहिए। राजस्थान व हरियाणा जैसे उत्तर–पश्चिमी राज्य जिनमें अधिक गर्मी पड़ती है, उनमें पशु आवास का लम्बा अंश पूर्व–पश्चिम दिशा में होना चाहिए जिससे पशु आवास में सूर्य की किरणें सीधी ना पड़े। पशु प्रबन्धन में दूसरा महत्वपूर्ण अवयव नवजात शिशु का प्रबन्धन है। नवजात शिशु की अधिक मृत्यु दर ही पशुपालन उद्योग में नुकसान का प्रमुख कारण है। इससे बचने के लिए बछड़ों को खीस अवश्य पिलानी चाहिए। पशु के ब्याने के बाद प्रथम 3–4 दिन का दूध खीस कहलाता है जो नवजात बछड़ों को बीमारी से लड़ने के लिए प्रतिरोधक क्षमता प्रदान करता है। छूत की बीमारी से लड़ने के लिए टीके लगवाने चाहिए तथा समय–समय पर कीड़ों से बचने के लिए दवा पिलानी चाहिए तथा पशु आवास पर उचित दवा का छिडकाव करना चाहिए। पशु प्रजनन को ध्यान में रखते हुए मादा बछड़ों का उचित पालन अत्यन्त आवश्यक है। दूध निकालते समय सफाई का विशेष ध्यान रखना चाहिए। अपने हाथों को, दूध की बाल्टी को, जानवर के पिछले भाग को एवं बांधने की जगह को साफ पानी से धोएं जिससे यदि एक जानवर को कोई बीमारी हो तो वो अन्य तक नहीं पहुंचे।

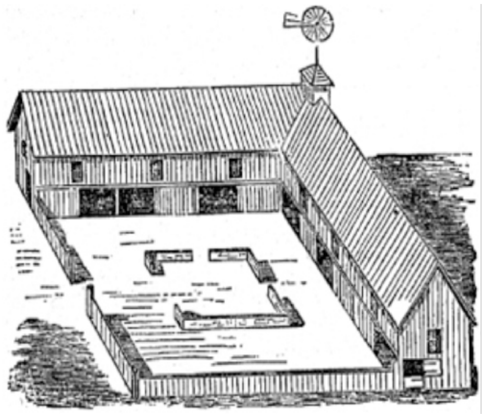

पशुपोषण :– पशुपालन का तीसरा एवं अतिमहत्वपूर्ण स्तम्भ पशुपोषण होता है। पशु पालन में होने वाले खर्चे का लगभग 60 प्रतिशत भाग पशुपोषण पर होता है। अतः पशुओं को खिलाने–पिलाने पर मुख्य रूप से ध्यान देना चाहिए। गर्भस्थ गाय डेयरी फार्म के भविष्य का आधार होती है। अतः भविष्य में अच्छा उत्पादन करने हेतु गर्भावस्था में गाय को अच्छा दाना एवं चारा खिलाना चाहिए। गर्भ में पलने वाले बछड़े का सम्पूर्ण शारीरिक विकास तथा उसके द्वारा प्राप्त उत्पादन की नींव इसी समय रखी जाती है ताकि गाय स्वयं को अगली ब्यात में अधिक उत्पादन के लिए तैयार करती है। ब्याने के पश्चात अनेक बीमारियों का समाधान इस समय के खान–पान पर निर्भर करता है। ब्याने के तुरंत पश्चात पशु को हल्का तथा पाचनशील भोजन देना चाहिए जिसमें ऊर्जा की मात्रा अधिक हो जिससे पशु ऋणात्मक ऊर्जा संतुलन में नहीं जाता है। जब दुग्ध उत्पादन चरम पर हो तब खानपान पर विशेष ध्यान देना चाहिए। दाना मिश्रण अच्छी गुणवत्ता का तथा उचित ऊर्जा व प्रोटीन के अनुपात में होना चाहिए। हरे चारे एवं सूखे चारे को उचित अनुपात में मिलाकर खिलाना चाहिए तथा चारा हमेशा उच्च गुणवत्तायुक्त, ताजा एवं काट कर खिलाना चाहिए। अधिकाशतः मृदा में खनिज/लवणों की कमी होती है। इसलिए पशुओं को चारे के अतिरिक्त खनिज लवण एवं विटामिन भी देना चाहिए जिससे संतुलित पशु आहार पशु ग्रहण कर सके।

सारांश : पशुपालन वर्तमान में किसानों की आय का प्रमुख साधन बनता जा रहा है। उचित प्रजनन, प्रबन्धन एवं पोषण द्वारा न केवल हम पशु के स्वास्थ्य का ध्यान रख सकते हैं अपितु कम लागत में अधिक उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं। अतः पशुपालन के इन तीन मुख्य स्तम्भों की जानकारी होना प्रत्येक किसानों के लिए आवश्यक है।

–अमित शर्मा, दीपक साम्बुरिया एवं योगेश कुमार,
टीचिंग एसोसिएट, स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, जयपुर।

अपने विश्वविद्यालय को जानें — पशुधन अनुसंधान केन्द्र, बोजून्दा (चित्तौड़गढ़)

राज्य के दक्षिणी–पश्चिमी क्षेत्र में वेटरनरी विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशालय के तहत वर्ष 2014 में बोजून्दा (चितौड़गढ़) में पशुधन अनुसंधान केन्द्र की स्थापना की गई। लगभग 481 बीघा क्षेत्र में फैले इस केन्द्र पर एन.एम.पी.एस. परियोजना के तहत 300 सिरोही नस्ल की बकरियों का पालन कर इस नस्ल के संवर्द्धन और विकास का कार्य शुरू किया गया। वर्ष 2016–17 में केन्द्र पर आर.ए.सी.पी. परियोजना में सिरोही बकरी फॉर्म की स्थापना की गई है। उन्नत नस्ल के बकरों का वितरण बकरी पालकों को किया जाना भी इसका उद्देश्य है। केन्द्र द्वारा चारा फसलों का उत्पादन कर आय का जरियां भी शुरू किया गया है। बकरी पालकों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति में सुधार, वैज्ञानिक प्रबंधन और प्रेक्टीसेज के लिए प्रशिक्षण और प्रदर्शनों का आयोजन, विख्यात सिरोही बकरी नस्लों का विकास और उन्नत बकरों का उत्पादन इस केन्द्र के उद्देश्यों में शामिल हैं। बोजून्दा (चितौड़गढ़) में पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र और पशुपालन डिप्लोमा संस्थानों का संचालन भी किया जा रहा है। केन्द्र पर वर्तमान में 397 बकरियों से लगभग 994 लीटर दूध प्रतिदिन प्राप्त किया जा रहा है। वर्ष 2015–16 में 50 और 31 अगस्त, 2016 तक 17 उन्नत किस्म के सिरोही बकरे, पशुपालकों, स्वंयसेवी संगठनों और राजकीय संस्थानों को प्रदान किये गये। फॉर्म पर चारागाह विकास के तहत उच्च प्रोटीन युक्त चारे सहजना के 5200 पौधे रोपित किये गये हैं। वर्ष 2014–15 से अब तक 226 कृषक और पशुपालकों ने केन्द्र का भ्रमण कर उन्नत बकरी पालन और अन्य तकनीकी ज्ञान प्राप्त किया है। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा पशुपालक उपयोगी साहित्य का प्रकाशन और वितरण भी किया जा रहा है। वर्तमान में केन्द्र पर एक प्रोफेसर/प्रमुख अन्वेषक, एक सह प्रमुख अन्वेषक, एक सहायक लेखाधिकारी, 4 टीचिंग एसोसिएट, एक टीचिंग सहायक, 2 पशुधन सहायक, एक कनिष्ट लिपिक, एक ड्राईवर तथा 12 अकुशल श्रमिक कार्यरत है।

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–अक्टूबर, 2016

पशु रोग	पशु/पक्षी प्रकार	क्षेत्र
मुँह–खुरपका रोग	गौवंश, भैंस, बकरी, भेड़	बांसवाड़ा, भरतपुर, दौसा, श्रीगंगानगर, जयपुर, झुंझुनू, धौलपुर, चूरू, संवाई–माधोपुर, अलवर, अजमेर, बीकानेर
पी.पी.आर.	बकरी, भेड़	हनुमानगढ़, बीकानेर, चूरू, झुंझुनू, सीकर, सवाई–माधोपुर, श्रीगंगानगर, जयपुर, पाली, सिरोही
चेचक (माता रोग)	बकरी, भेड़, ऊंट	जयपुर, बीकानेर, जोधपुर, बाड़मेर, जैसलमेर, प्रतापगढ़, बांसवाड़ा
गलघोंटू	भैंस, गौवंश	धौलपुर, जयपुर, सवाई–माधोपुर, दौसा टौंक, बून्दी, राजसमन्द, पाली, सीकर, उदयपुर, श्रीगंगानगर, अलवर, हनुमानगढ़ झुंझुनू
न्यूमोनिक पाश्चुरेलोसिस	गौवंश, भैंस, बकरी, भेड़	सीकर, बीकानेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, जयपुर, भरतपुर, बांसवाड़ा
ठप्पा रोग	भैंस, गौवंश	जयपुर, बीकानेर, जैसलमेर, चित्तौड़गढ़, राजसमन्द
फड़किया	बकरी, भेड़	सवाई–माधोपुर, बाँसवाड़ा, जयपुर, सीकर, बीकानेर, हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर, धौलपुर, भीलवाड़ा
Enzootic Abortion in Ewes (EAE) / Chalmydial Abortion	भेड़, बकरी	बीकानेर, नागौर
सर्रा (तिबरसा)	ऊंट, भैंस,	बांसवाड़ा, धौलपुर, हनुमानगढ़, बून्दी, झालावाड, उदयपुर
रक्त प्रोटोजोआ थाइलेरिओसिस एवं बबेसियोसिस	भैंस, गौवंश	बांसवाड़ा, बीकानेर, बून्दी, धौलपुर, हनुमानगढ़, सवाई– माधोपुर, जयपुर, अलवर, चूरू, पाली
अन्तः परजीवी (गोल–कृमि, पर्ण–कृमि एवं फीता–कृमि)	भैंस, गौवंश, भेड़, बकरी, ऊंट	डूंगरपुर, कोटा, राजसमन्द, बांसवाड़ा, सवाई–माधोपुर, भरतपुर, बून्दी, धौलपुर, सीकर, हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर, बीकानेर, चूरू, उदयपुर
खुजली	ऊंट, बकरी	झुंझुनू, बीकानेर, बाड़मेर, जैसलमेर, जोधपुर

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. जी.एस. मनोहर, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, प्रो. ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर एवं प्रो. अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान, एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर।
फोन– 0151–2204123, 2544243, 2201183

पशुओं में यूरिया विषाक्तता– कारण व बचाव

वर्तमान समय में यूरिया के उपयोग से हम सभी भली–भांति परिचित हैं। यह एक रासायनिक उर्वरक है एवं भूमि में नाइट्रोजन की मात्रा को बढ़ाने में प्रयोग में लिया जाता है। इसके अतिरिक्त पशुओं में भी, मुख्य रूप से रोमंथी पशुओं में, यूरिया को तूड़ी या चारे के साथ एक निर्धारित मात्रा में मिलाते हुए, चारे का उपचार करते हुए दिया जाने लगा है। रुमेन जीवाणु इस यूरिया को प्रोटीन में बदल देते हैं। इस प्रकार चारे–बांटे की कमी की स्थिति में पशु पोषण एवं उत्पादन में सहयोग मिलता है, किन्तु अगर यूरिया शरीर में न्यूनतम विषाक्त स्तर से अधिक हो जाये तो यह पशु की मौत का कारण भी बन सकता है। यूरिया विषाक्तता अधिकतर गाय और भेड़ों में एवं कभी–कभी घोड़ों में होती है। कई बार किसान भाई, गलती से, यूरिया दिए हुए खेत में अगर पशु को चरने छोड़ देते हैं तो भी पशुओं में यूरिया विषाक्तता हो जाती है।

यूरिया विषाक्तता के लक्षण

पशुओं में विषाक्तता के लक्षण लगभग 10–30 मिनट के भीतर दिखने लगते हैं, जैसे –

- दांत पीसना, मुँह से लार का गिरना और झाग बनना
- पेट–दर्द, आफरा, जोर–जोर से सांस लेना
- मांसपेशियों में खिंचाव आना, बार–बार मल–मूत्र का त्याग करना
- दर्द से चिल्लाना, दौरे पड़ना एवं शरीर में ऐंठन पड़ जाना
- कमजोरी, बार–बार जमीन पर गिर जाना
- तीव्र विषाक्तता में पशु सुन्न अवस्था (कोमा) में जाकर 4 से 5 घंटों के भीतर मर जाता है।

उपचार व बचाव के उपाय –

- यूरिया विषाक्तता का संदेह होते ही विषाक्त चारे से पशु को दूर करें एवं तुरंत पशु चिकित्सक से संपर्क कर सलाह एवं उपचार कराएं।
- यूरिया अधिकतर पाचन तंत्र, यकृत (लिवर), गुर्दा आदि अंगों को हानि पंहुँचाता है। पेट में अमोनिया (एक प्रकार की संक्षारक गैस जो कि पेट में यूरिया से बनती है) की मात्रा बढ़ जाती है। इसलिए पशुचिकित्सक से पेट की सिरके के अम्ल से सफाई करवाये क्योंकि अम्ल क्षार का विरोध कर इसकी मात्रा को कम करता है।
- यूरिया विषाक्तता से पशुओं की मृत्यु को रोकने के लिए उसको सबसे पहले साधारण नमक दें और उसके बाद धीरे–धीरे पशु आहार में यूरिया देना शुरू करें एवं धीरे–धीरे इसकी मात्रा पशु आहार विशेषज्ञ के अनुसार बढाएं। साथ–साथ ये भी ध्यान रखें कि यूरिया उपचारित चारे के अभ्यस्त पशु को प्रतिदिन यूरिया दें। अगर किसी भी कारणवश पशु को कुछ दिनों के लिए आप यूरिया नहीं दे पाए हैं तो उसको फिर से सबसे कम मात्रा से शुरू करें क्योंकि शुरू में ही यूरिया की अधिक मात्रा पशु के लिए मृत्यु का कारण बन सकती है।
- कभी भी किसी भूखे–कमजोर पशु या जो पशु यकृत (लिवर) की बीमारी से पीड़ित हो, उसको यूरिया ना दें।
- यूरिया युक्त खाद को निश्चित मात्रा में ही उपयोग करें। यूरिया युक्त खाद का खेत में छिड़काव के बाद पशु के खेत में आने–जाने और चरने पर लगभग 12 घंटों तक रोक लगा दें।

पशुपालक भाई इन सभी लक्षणों एवं बचाव के उपायों को ध्यान में रखें तो यूरिया विषाक्तता से पशुओ में होने वाली मृत्यु पर रोक लगाई जा सकती है।

–डॉ. ममता मीणा, डॉ. अशोक गौड़, डॉ. प्रतिष्ठा शर्मा एवं डॉ. नीलम दिनोदिया, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

ऊंटों में माता रोग

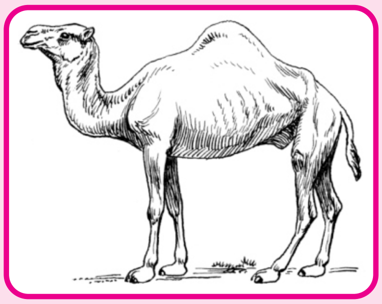

राजस्थान राज्य में ऊंटों की संख्या लगातार कम होने के कारण इस प्रजाति का सरंक्षण एवं सवंर्द्धन आवश्यक हो गया है। इसी बात को प्राथमिकता देते हुए सरकार ने ऊंट को राज्य पशु का भी दर्जा दिया है। ऊंटों में होने वाले रोगों में माता एक बहुत ही खतरनाक और बहुत तेजी से फैलने वाला विषाणुजनित संक्रामक रोग है। यह रोग सबसे ज्यादा कम उम्र, बूढ़े एवं कमजोर ऊंटों को प्रभावित करता है। हालांकि इस रोग में मृत्युदर कम होती है, लेकिन ग्रसित ऊंट दूसरे रोगों जैसे निमोनिया आदि से प्रभावित होकर मर सकते हैं। सामान्यतः इस मौसम में यह रोग ऊंटों को प्रभावित करने लगता है और हवा, आपसी सम्पर्क तथा कीट–मक्खी इत्यादि द्वारा फैलता है। सामान्यतः ऊंट पालक इस रोग की आसानी से पहचान कर लेते हैं, लेकिन इस रोग के नियंत्रण में उन्हें परेशानी का सामना करना पड़ता है। इस रोग में ऊंट को शुरूआत में तेज बुखार आता है, शरीर के विभिन्न भागों की त्वचा पर माता के दाने (बण) निकल आते हैं और बाद में सांस लेने में तकलीफ होती है व नाक से मवादयुक्त स्त्राव आने लगता है। तेज बुखार की पहचान कर ऊंट पालक को चाहिए कि शरीर के बालरहित भाग जैसे कि पूंछ के नीचे, नाक, होंठ इत्यादि को देखकर माता के दानों (निशानों) की पहचान करें। इसके अतिरिक्त टांगों के निचले हिस्से में, सिर पर एवं अण्डकोशों में सूजन आ जाती है। कभी–कभी आंखों में सफेदी भी आ जाती है। इस रोग में न्यूमोनिया तथा गर्भपात भी हो सकता है। इस रोग से प्रभावित ऊंट की कार्यक्षमता में काफी कमी हो जाती है और अन्य बीमारियों व संक्रमण के प्रति संवेदनशील हो जाता है जिससे ऊंट पालक को काफी नुकशान उठाना पड़ता है क्योंकि यह एक विषाणुजनित बीमारी है जिसका इलाज संभव नहीं है और वर्तमान में इसका टीका भी उपलब्ध नहीं है। अतः इस रोग का नियंत्रण ही बचाव है। माता रोग से ग्रस्त ऊंटों को स्वस्थ ऊंटों से तुरंत अलग कर देना चाहिए। बीमार पशु को नरम चारा देना चाहिए एवं न्यूमोनिया या अन्य संक्रमण से बचाव के लिए पशुचिकित्सक से सम्पर्क कर उचित एंटीबायोटिक दवाईयों का प्रयोग करें। छोटे टोगडियों की देखभाल पर ऊंटपालक को विशेष ध्यान देना चाहिए।

– प्रो. ए. के. कटारिया
प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास (मो. 9460073909)

अपने स्वदेशी बकरी वंश को पहचानें > जख़राना बकरी: गौरव प्रदेश का

जखराना बकरी की नस्ल मुख्यतया पूर्वी राजस्थान, उत्तरी–पश्चिमी शुष्क व अर्द्ध शुष्क जलवायु क्षेत्र में पायी जाती है। यह नस्ल अलवर जिले के जखराना गांव से उद्गम हुई है, इसलिए इसका नाम ''जखराना'' पड़ा। अलवर जिले के जखराना गांव व इसके आस–पास के गांवों में इस नस्ल की उन्नत बकरियां मिलती हैं। बकरियों में यह बड़े आकार की नस्ल है। इसकी त्वचा का रंग काला होता है लेकिन कानों व मुंह पर सफेद धब्बे होते हैं। इसका मुंह पतला व उभरा हुआ मस्तक होता है। यह बीटल नस्ल की बकरी से मिलती–जुलती होती है, लेकिन इस नस्ल की बकरियां कुछ ऊंची होती है। यह नस्ल दूध व मांस दोनों के लिए उपयोग में ली जाती है। ज्यादातर बकरियां दूध के लिए पाली जाती है। नर (बकरे) मांस के लिए बेच दिये जाते हैं। चारागाह में चरने वाली जखराना बकरियां छः महिनों के दूध काल में 2–2.50 किलो (औसतन) प्रतिदिन दुग्ध देती है, लेकिन यह दूध उत्पादन क्षमता स्टॉल फीडिंग पर भी प्राप्त की जा सकती है। इसके दूध में तुलनात्मक ज्यादा वसा (5.06 प्रतिशत), एस.एन.एफ. (8.6 प्रतिशत) एवं प्रोटीन (3.7 प्रतिशत) होती है। 145 दिनों के दुग्धकाल में औसतन 154 किलो दूध उत्पादन होता है। जखराना बकरी के नर का भार 55 किग्रा एवं मादा का शारीरिक भार 45 किग्रा तक होता है। यह बकरी लगभग एक वर्ष 6 माह में पूर्ण विकसित होकर ब्याह जाती है। यह बकरी साल में दो बार बच्चे देती है। 40–50 प्रतिशत बकरियां एक बार में दो बच्चे भी दे देती है। 18वीं पशुगणना के अनुसार भारत में 1,95,3,046 जखराना नस्ल की बकरी उपलब्ध है जो मुख्यतया राजस्थान व हरियाणा के कुछ भू–भाग में पायी जाती है।

सफलता की कहानी | रामकुमार की पहचान बनी- एक सच्चा ''कृषक-मित्र''

नोहर (हनुमानगढ़) के स्नातक शिक्षित रामकुमार खिंचड एक प्रगतिशील कृषक और पशुपालक होने के साथ–साथ कृषक मित्र की भूमिका को भी बखूबी निभा रहे हैं। खिंचड़ ने अपनी शिक्षा–दीक्षा पूरी करने के बाद बिना समय गंवायें अपने पुश्तैनी कृषि और पशुपालन के व्यवसाय को पूरी शिद्दत के साथ अपनाया और आराम से जीवनयापन कर रहे हैं। वे अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों के साथ–साथ सामाजिक दायित्वों के प्रति भी पूरी तरह सजग रहकर कार्य कर रहे हैं। उन्होंने अपनी 15 बीघा कृषि योग्य भूमि और गाय–भैंस पालन से कार्य शुरू किया। शिक्षित होने के कारण उन्होंनें वैज्ञानिक रीति–नीति और उन्नत कृषि और पशुपालन के महत्व को समझा और उसी के अनुरूप आगे बढ़ने के लिए कृषि विज्ञान केन्द्र के संपर्क में रहे। अपनी दक्षता और योग्यता बढ़ाने के लिए समय–समय पर वैज्ञानिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लिया। कृषि की नवीन तकनीक और उन्नत पशुपालक को अपनाकर अपने व्यवसाय को लाभकारी बनाया। खिंचड़ ने 15 बीघा कृषि योग्य भूमि में मैथी, सरसों, कपास, गेहूं, ग्वार की फसलों सहित चारा प्रबंधन के लिए बरसीम, बाजरा, ज्वार की भी बुआई करते रहते हैं। उन्हें इससे लगभग 4–5 लाख रू. की वार्षिक आमदनी प्राप्त हो जाती है। अपने खेत में ट्यूब वैल व पम्पसैट की मदद से जल का उचित प्रबंधन भी करते हैं। वे समय–समय पर कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर के वैज्ञानिकों के सम्पर्क में रहकर ''अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन'' अपने खेत में लगवाते रहते है। इससे आसपास के कृषकों को बीजों की उन्नत किस्मों, शस्य क्रियाओं और कृषि तकनीकी की नवीनतम जानकारी मिलती है। इस समय खिंचड़ के एक कृषक मित्र के रूप में कार्य करने से समूचे कृषक समुदाय को भी लाभ मिल रहा है। कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर के वैज्ञानिकों की सलाह से समय–समय पर अपने गाय, भैंस, बछड़े–बछड़ियों की डिवर्मिंग करवाकर, टीकाकरण व मिनरल मिक्चर आदि देकर अपने पशुधन को स्वस्थ्य और तंदुरुस्त बनाए रख कर पूरा दुग्ध उत्पादन लेते हैं। वे अपने अन्य पशुपालक भाईयों को भी ऐसा ही करने की सलाह देते रहते हैं। पशुधन उत्पादों का विक्रय कर अतिरिक्त आय भी अर्जित करते हैं। वैज्ञानिक तरीके से खेती–बाड़ी, उचित जल प्रबंधन, समन्वित कीट प्रबंधन, पशु आहार व चारा प्रबंधन का समुचित उपयोग करने के साथ ही अन्य किसानों को भी इसके लिए प्रेरित करने वाले खिंचड़ क्षेत्र में एक सच्चे ''किसान मित्र'' के रूप में जाने पहचाने जाते हैं।

सम्पर्क : रामकुमार खिंचड़, नोहर (हनुमानगढ़) मो 9799458469

निदेशक की कलम से...

ब्यांत के बाद पशु की समुचित देखभाल जरूरी

पशुपालन के लिए उन्नत ज्ञान में वृद्धि, उचित पोषण और प्रबंधन, स्वास्थ्य और नस्लों के संवर्द्धन पर ध्यान देकर हम कम लागत में भी अधिकतम आय प्राप्त कर सकते हैं। पशुओं में ब्यांत की शुरूआत पशुपालकों के लिए खुशी देने का समय होता है, यहां यह ध्यान रखना जरूरी है कि पशु की इस समय देखभाल व आहार व्यवस्था पूरी ब्यांत के दूध को प्रभावित करती है। पशु के कुल दूध उत्पादन का लगभग 60 प्रतिशत पहले तीन–चार महीनों में होता है। अतः यह समय बहुत महत्वपूर्ण होता है। दूध देने वाली गाय का राशन इसके वजन, दूध में चिकनाई की मात्रा और दुग्ध उत्पादन के हिसाब से निर्धारित किया जाता है जिसमें आवश्यक पोषक तत्व भी शामिल किये जाने चाहिए। गाय की अपेक्षा भैंस की पोषण आवश्यकताएं भिन्न होती हैं क्योंकि इसके दूध में वसा की मात्रा ज्यादा होती है। अतः भैंस को अधिक राशन की आवश्यकता होती है। भैंस की पाचन शक्ति गाय की तुलना में अधिक होती है, अतः उसे मोटे व ज्यादा रेशे वाला राशन अधिक मात्रा में दिया जा सकता है। सूखा चारा, हरा चारा व दाना मिश्रण तीनों को एक साथ मिलाकर पशु को उसकी आवश्यकता के अनुसार उपलब्ध करवाया जाए तो राशन पचने की दर बढ़ जाती है जिससे राशन का अधिक से अधिक लाभ मिल पाता है। पशुपालकों को रखरखाव से संबधित गलत धारणाओं से भी बचना चाहिए। ब्यानें के बाद तेल पिलाना बहुत अधिक फायदेमंद नहीं होता है। इसके स्थान पर रूमैन बाईपास फैट खिलाना बेहत्तर है। ब्याहने के बाद पशु को अधिक ऊर्जा की जरूरत रहती है अतः उसे अच्छा आहार दिया जाना चाहिए। ब्यानें के तुरंत बाद पशु को कम प्रोटीन व अधिक कार्बोहाइड्रेट वाला आहार उपलब्ध करवाना चाहिए। इन बातों का ध्यान रखकर हम अपने पशु से पूरा दुग्ध उत्पादन ले सकते हैं। **प्रो. राजेश कुमार धूड़िया, प्रसार शिक्षा निदेशक (मो. 9414283388)**

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित ''धीणे री बात्यां'' कार्यक्रम

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी चैनलों से प्रत्येक गुरूवार को प्रसारित **''धीणे री बात्यां''** के अन्तर्गत **अक्टूबर 2016** में वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के वैज्ञानिकगण अपनी वार्ताएं प्रस्तुत करेंगे। राजकीय प्रसारण होने के कारण कभी कभी गुरूवार के स्थान पर इन वार्ताओं का प्रसारण अन्य उपलब्ध समय पर भी किया जा सकता है। पशुपालक भाईयों से निवेदन है कि प्रत्येक गुरूवार को प्रदेश के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों के मीडियम वेव पर सायः 5:30 से 6:00 बजे तक इन वार्ताओं को सुनकर पशुपालन में लाभ उठाएं।

क्र.सं.	वार्ताकार का नाम व विभाग	वार्ता का विषय	प्रसारण तिथि
1	डॉ. सुनंदा शर्मा 9414039201 पशु प्रसूति एवं मादा रोग विभाग, सी.वी.ए.एस., बीकानेर	कृत्रिम गर्भाधान भ्रातियां और अवधारणाएं	06.10.2016
2	डॉ. राजीव जोशी 9414141189 प्रभारी अधिकारी, पशुधन अनुसंधान केन्द्र, नोहर	मरूक्षेत्र की कामधेनू : राठी गाय	13.10.2016
3	डॉ. सुमित प्रकाश यादव 9413489627 पशुधन अनुसंधान केन्द्र, कोड़मदेसर	गौवंश में फुराव के कारण एवं उपचार	20.10.2016
4	डॉ. कुलदीप नेहरा 9602784887 पशुधन अनुसंधान केन्द्र, नोहर	पशुओं से अधिक उत्पादन प्राप्त करने में पशु चयन की भूमिका	27.10.2016

मुस्कान !

संपादक
प्रो. आर. के. धूड़िया
सह संपादक
प्रो. ए. के. कटारिया
प्रो. उर्मिला पानू
दिनेश चन्द्र सक्सेना
संयुक्त निदेशक (जनसम्पर्क) से.नि.
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने है।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवामें

....

....

....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. आर. के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन विजय भवन पैलेस राजुवास बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. आर. के. धूड़िया